यहूदी लोगों में यह परंपरा थी कि वे उन स्थानों को नाम देते जहाँ परमेश्वर ने स्वयं को किसी विशेष या शक्तिशाली तरीके से प्रकट किया हो। ये नाम न केवल भौगोलिक पहचान होते थे, बल्कि परमेश्वर की वफादारी और हस्तक्षेप की आध्यात्मिक याद दिलाने वाले निशान भी होते थे।

उदाहरण के लिए, याकूब का लूज में परमेश्वर से मिलना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उसने स्वर्ग से पृथ्वी तक पहुंचने वाली एक सीढ़ी का दृश्य देखा, जिस पर देवदूत ऊपर-नीचे जा रहे थे। याकूब ने इसे एक पवित्र स्थान माना जहाँ स्वर्ग और पृथ्वी मिलते हैं। उसने इस स्थान का नाम बेतएल रखा, जिसका अर्थ है “परमेश्वर का घर”:

“और उसने उस स्थान का नाम बेतएल रखा; पहले उस नगर का नाम लूज था।”
(उत्पत्ति 28:19)

यह नाम याकूब की परमेश्वर की उपस्थिति और वाचा को स्वीकार करने

का प्रतीक था।

एक और उदाहरण है 1 शमूएल 7:12 में, जहाँ नबी शमूएल ने फिलिस्तियों से इस्राएल की मुक्ति का स्मरण करते हुए एक पत्थर रखा और उसका नाम एबेन-एसेर रखा, जिसका अर्थ है: “अब तक परमेश्वर ने हमारी मदद की।” यह पत्थर परमेश्वर की वफादारी की मूर्त स्मृति थी:

“तब शमूएल ने एक पत्थर उठाया और उसे मिज़्पा और शेन के बीच
रख दिया, और उसका नाम एबेन-एसेर रखा और कहा, अब तक परमेश्वर
ने हमारी मदद की।”
(1 शमूएल 7:12)

राजा शाऊल और दाऊद की कहानी में भी परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा साफ झलकती है। शाऊल की लगातार पीछा करने के बावजूद दाऊद कई बार मृत्यु से बच निकला, जो परमेश्वर के जीवन पर संपूर्ण प्रभुत्व को दर्शाता है।

1 शमूएल 23:26-28 में दाऊद एक कठिन परिस्थिति में फंस जाता है, जहाँ शाऊल उसके पीछे है और बच निकलने का कोई स्पष्ट रास्ता नहीं दिखता। परन्तु इसी वक्त शाऊल के पास एक संदेश आता है कि

फिलिस्ती अपनी सेना लेकर हमला कर रहे हैं। शाऊल को दाऊद का पीछा छोड़कर फिलिस्तियों से लड़ने के लिए लौटना पड़ता है। इसी स्थान का नाम दाऊद ने सेला हामालेकोथी रखा, जिसका अर्थ है “बच निकलने का चट्टान” या “पलायन का स्थान”। यह नाम परमेश्वर को अंतिम शरणस्थल और उद्धारकर्ता के रूप में मान्यता देता है।

“शाऊल पहाड़ की एक तरफ था, और दाऊद और उसके लोग दूसरी तरफ थे,
वे शाऊल से बचने के लिए जल्दी कर रहे थे।
शाऊल और उसके लोग दाऊद और उसके लोगों को पकड़ने के लिए करीब
आ रहे थे।
तभी एक संदेशवाहक शाऊल के पास आया और बोला, ‘जल्दी करो! फिलिस्ती देश में हमला कर रहे हैं।’
तब शाऊल ने दाऊद का पीछा करना बंद किया और फिलिस्तियों से लड़ने चला गया। इसीलिए उस स्थान का नाम सेला-हामालेकोथ रखा गया।”
(1 शमूएल 23:26-28)

धार्मिक विचार

बेतएल, एबेन-एसेर और सेला हामालेकोथी जैसे स्थानों का नामकरण गहरा धार्मिक अर्थ रखता है। यह दर्शाता है कि एक ऐसा जनसमूह जो परमेश्वर के ऐतिहासिक हस्तक्षेप को निरंतर याद करता है। ऐसे नाम देना पूजा का एक रूप, गवाही देना, और आने वाली पीढ़ियों के

लिए शिक्षा का माध्यम है—जो विश्वास को ठोस अनुभवों से जोड़ता है।

दाऊद के लिए सेला हामालेकोथी केवल शारीरिक बचाव का प्रतीक नहीं था, बल्कि परमेश्वर में गहरा विश्वास था कि वह शरण और किला है:

“परमेश्वर मेरी चट्टान, मेरी किला और मेरा उद्धारकर्ता है; मेरा परमेश्वर मेरी शरणगाह, मेरा ढाल और मेरा उद्धार का
सींग है।”
(भजन संहिता 18:2)

हमें क्यों याद रखना चाहिए?

परमेश्वर के कामों को याद रखना एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अभ्यास है। जैसे इस्राएलियों ने पत्थर रखकर और स्थान नाम देकर परमेश्वर की वफादारी याद रखी, वैसे ही हमें भी उन क्षणों को चिन्हित करना चाहिए जब परमेश्वर हमारे जीवन में शक्तिशाली ढंग से कार्य करता है। अपनी गवाही लिखना या ऐसी घटनाओं को दर्ज करना हमें कृतज्ञता, विश्वास और आशा बढ़ाने में मदद करता है।

परमेश्वर हर दिन चमत्कार करता है, पर हम अक्सर उन्हें सामान्य मान लेते हैं या जल्दी भूल जाते हैं। विश्वास के पूर्वजों की

तरह, हमें भी जानबूझकर इन यादों को संजोना चाहिए ताकि हमारा परमेश्वर के साथ चलना मजबूत हो सके।

परमेश्वर आपका भला करे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp